ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in July 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

"महिलाओं एवं पुरूषों का अनुपात एक अध्ययन भारत के हरियाणा राज्य के सन्दर्भ में"

डॉ. सुरेंद्र कुमार, सहायक आचार्य (भूगोल), श्री महावीर जैन पी. जी. महाविद्यालय, हनुमानगढ़ टाउन, राजस्थान

प्रस्तावित शोध की प्रस्तावना

भारत विविधताओं का देश है। यहां न केवल भौतिक विविधता पाई जाती है अपितु सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विविधता पाई जाती है। भौतिक विविधता में भारत में उत्तर में महान हिमालय पर्वत, दक्षिण में प्रायद्वीप पठार तथा गंगा–ब्रह्मपुत्र के मैदान पाये जाते हैं और इसके अलावा भारत में जलवायु विविधता भी पाई जाती है। इन भौतिक विविधताओं के आधार पर व सांस्कृतिक, आर्थिक व जनांकिकीय विविधताएं उत्पन्न होती है। अतः भारत के अलग–अलग प्रदेशों व राज्यों में अलग–अलग सामाजिक आर्थिक व जनांकिकीय विशेषताएं पाई जाती हैं।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। भारत में जनगणना 2011 के अनुसार 121.02 करोड़ व्यक्ति निवास करते हैं। 2001 में यह जनसंख्या 102.8 करोड़ थी। अतः 2001–2011 के दशक में भारत में 18.1 करोड़ व्यक्तियों की वृद्धि हुई है। यह वृद्धि संसार के 5वीं सबसे घनी आबादी वाले देश ब्राजील की जनसंख्या से कुछ ही कम है। विश्व की कुल जनसंख्या 690.8 करोड़ का 17.53 प्रतिशत जनसंख्या भारत में निवास करती है। यहां पर हम कह सकते हैं कि संसार में प्रत्येक 6 व्यक्तियों में से एक व्यक्ति है। 2011 में भारत की जनसंख्या अमरीका, इण्डोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान, बांग्लादेश, जापानकी संयुक्त जनसंख्या (121.4 करोड़) के बराबर है। भारत विश्व के कुल क्षेत्रफल के 2.4 प्रतिशत भाग संसार राज्य अमरीका में संसार के 7.2 प्रतिशत क्षेत्रफल में केवल विश्व की जनसंख्या का 4.5 प्रतिशत भाग ही निवास करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुमान के द्वारा संसार की जनसंख्या 2000–2010 के मध्य 1.23 प्रतिशत वार्षिक दर से वृद्धि हुई हैं। भारत में इस दौरान (2001–2011) वार्षिक वृद्धि 1.64 प्रतिशत हुई है। जबकि सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश चीन में वार्षिक वृद्धि दर 0.33 प्रतिशत रही है। अतः ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि कुछ दशकों में भारत चीन की जनसंख्या को पीछे हुए विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश हो जायेगा।

भारत की जनसंख्या में यह वृद्धि सभी राज्यों में एक समान नहीं है। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत की जनसंख्या केवल 23.8 करोड़ थी। 110 वर्षो के दौरान भारत की जनसंख्यामें 4 गुणा वृद्धि दर्ज की गई है। यह वृद्धि सन् 1950 के बाद तीव्र गति से वृद्धि हुई है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

उत्तर प्रदेश भारत में सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य है। जहाँ पर लगभग 20 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। इसके बाद दूसरा स्थान महाराष्ट्र राज्य का है जहाँ पर लगभग 11 करोड़ जनसंख्या निवास करती हैं। बिहार राज्य का जनसंख्या की दृष्टि से तीसरे स्थान पर आता है। जहाँ पर 10.3 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। इस प्रकार हरियाणा राज्य का देश में 17वां स्थान है। जहाँ पर 2011 की जनगणना के अनुसार 2.5 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत की कुल जनसंख्या का 2.09 प्रतिशत जनसंख्या हरियाणा राज्य में निवास करती है।

भारत की जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि वर्ष 1971–81 के दौरान हुई थी जब वृद्धि दर 24.66 प्रतिशत प्रति दशक में हुई। इसके पश्चात् वृद्धि दर में लगातार कमी आती गई। सन् 1981–1991 में वृद्धि दर 23.87 प्रतिशत थी जो 1991–2001 में घटकर 21.54 प्रतिशत हो गई तथा वर्ष 2001–2011 में वृद्धि 17.64 रही है। वृद्धि दर यह कमी अब तक सबसे अधिक हुई है। 2001–2011 के दौरान लगभग सभी राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों की वृद्धि दर में 1991–2001 की तुलना में कमी दर्ज की गई है। देश के 6 सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्यों उत्तर–प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिमी बंगाल, आन्ध्र प्रदेश व मध्य प्रदेश 1991–2001 की

Scientific Indexing Services

तुलना में 2001—2011 में वृद्धि दर में कमी दर्ज की गई है। हरियाणा राज्य में भी इस दौरान वृद्धि दर में तीव्र कमी आई है। जो 1991—2001 में 28.43 प्रतिशत से गिरकर 2001—2011 में 19.9 प्रतिशत रह गई।

छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, पुडुचेरी को छोड़कर सभी राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों में 2001 व 2011 के मध्य प्रतिशत दशकीय जनसंख्या वृद्धि की कमी दर्ज की है। 15 राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों में जिनमें हरियाणा शामिल है, वृद्धि दर में यह कमी 5 प्रतिशत से अधिक दर्ज की गई है। इन 15 राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेश भारत की कुल जनसंख्या का 40 प्रतिशत निवास करती है। भारत के बड़े राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों की वृद्धि दर में यह कमी 26 प्रतिशत दिल्ली में दर्ज की गई है। इसके पश्चात् द्वितीय सर्वाधिक कमी हरियाणा राज्य में 8.53 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई हैं।

भारत में लिंगानुपात

भारत में लिंगानुपात की गणना महिलाओं के प्रति 1000 पुरूषों के अनुपात में की जाती है और यह हमेशा पुरूषों के पक्ष में रहा है जो 1901 में 972 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर थी जो घटकर 946 महिलाएं प्रति हजार पुरूषों पर आजादी के समय 1951 में पाई गई। 20वीं सदी के प्रारम्भ से अंतिम दशक तक लिंगानुपात में निरन्तर कमी दर्ज की गई। दशक 1961—71 के मध्य यह कमी सर्वाधिक हुई। जब 1961 में लिंगानुपात 941 से घटकर 1971 में 930 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर दर्ज की गई। इसके पश्चात् लिंगानुपात में 1981 में वृद्धि दर्ज की गई और इस समय लिंगानुपात में एक बार 1991 में कमी दर्ज की गई। इस वर्ष लिंगानुपात 929 हो गया। 21वीं शताब्दी में वैश्विकरण प्रक्रिया के कारण सामाजिक प्रावेदन होने से भारत में स्त्रियों की दशा में सुधार होने के कारण और जिसका प्रभाव लिंगानुपात में वृद्धि के द्वारा देखा जा सकता है। किन्तु लिंगानुपात की यह वृद्धि शिशु लिंगानुपात में नजर नहीं आती। शिशु लिंगानुपात में लिंगानुपात के विपरित 1991 से 2011 के मध्य लगातार कमी दर्ज की गई है। और यह कमी काफी तीव्र है। जहाँ 1991 में शिशु लिंगानुपात 945 था वह 2001 में घटकर 927 रह गया और 2011 में यह शिशु लिंगानुपात घटकर 914 स्त्री बच्चे प्रति 1000 पुरूष बच्चों पर रह गया।

लिंगानुपात में वृद्धि तथा शिशु लिंगानुपात में कमी भारत के विभिन्न राज्यों में एक समान नहीं है। भारत में सर्वाधिक लिंगानुपात केरल राज्य में है जहाँ 2011 में लिंगानुपात 1084 तथा 2001 में 1058 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर थी। इसके अलावा केन्द्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में लिंगानुपात 2011 में 1038 तथा 2001 में 1001 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर दर्ज किया गया। भारत में दो प्रदेश राज्यों में लिंगानुपात महिलाओं के पक्ष में पाया गया है। इसके अलावा सभी राज्यों में लिंगानुपात पुरूषों के पक्ष में जाता है। दक्षिण के राज्यों में जैसे तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, गोवा में लिंगानुपात अपेक्षाकृत अच्छा है। इन राज्यों में 2001 में लिंगानुपात पुरूषों के पक्ष में जाता है। दक्षिण के राज्यों में जैसे तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, गोवा में लिंगानुपात अपेक्षाकृत अच्छा है। इन राज्यों में 2011 में लिंगानुपात उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड व असम ऐसे बड़े राज्य है जहाँ लिंगानुपात देश के औसत लिंगानुपात 940 से अधिक है। इन राज्यों में 2011 में लिंगानुपात क्रमशः 991, 978, 963, 954 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर दर्ज की गई।

प्रस्तावित शोध का महत्व

उत्तर—पूर्व के कुछ राज्यों में भी लिंगानुपात जैसे मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय में भी लिंगानुपात देश के औसत लिंगानुपात से अधिक दर्ज किया गया। 2011 में इन राज्यों में लिंगानुपात क्रमशः 987, 975, 961, 986 दर्ज किया गया। अन्य सभी राज्यों में लिंगानुपात देश के औसत लिंगानुपात से कम पाया गया। देश में सबसे कम लिंगानुपात 877 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर हरियाणा राज्य में 2011 की जनगणना के अनुसार दर्ज किया गया।

जम्मू–कश्मीर, पंजाब, सिक्किम ऐसे राज्य हैं जहाँ लिंगानुपात 2011 में 900 से कम दर्ज किया गया। इन राज्यों में लिंगानुपात क्रमशः 883, 893, 889 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर दर्ज किया गया। इसके अलावा केन्द्र शासित प्रदेश चण्डीगढ़, दमन व दीव, दादर व नागर हवेली, अण्डमान व निकोबार में लिंगानुपात 900 से कम पाया गया। 2011 में इनमें लिंगानुपात क्रमशः 818, 618, 775, 878 स्त्रियां प्रति हजार पुरूषों पर दर्ज किया गया।

हरियाणा राज्य में 2001 व 2011 के मध्य लिंगानुपात में वृद्धि दर्ज की गई। हरियाणा में 1991 में लिंगानुपात 865 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर थीं जो सन् 2001 में घटकर 861 रह गया। इसके पश्चात् 2011 में लिंगानुपात में वृद्धि होने के पश्चात् यह लिंगानुपात 877 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर दर्ज की गई।

हरियाणा राज्य में 2001 व 2011 के मध्य लिंगानुपात में वृद्धि दर्ज की गई। हरियाणा में 1991 में लिंगानुपात 865 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर थीं जो सन् 2001 में घटकर 861 रह गया। इसके पश्चात् 2011 में लिंगानुपातमें वृद्धि होने के पश्चात्यह लिंगानुपात 877 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर दर्ज की गई।

2001 व 2011 के मध्य सर्वाधिक लिंगानुपात में वृद्धि दिल्ली में हुई है जहाँ वृद्धि 45 की हुई। दिल्ली में 2001 में लिंगानुपात 821 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर थी जो वर्तमान में 2011 में बढ़कर 866 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर हो गई हैं। लिंगानुपात में यह वृद्धि देश के औसत लिंगानुपात में वृद्धि 7 प्रतिशत की वृद्धि दर से कहीं अधिक है। इसके अलावा लिंगानुपात में अत्यधिक वृद्धि चण्डीगढ़ में हुई है जहाँ 41 स्त्रियों की वृद्धि दर्ज की गई है। 2001 में लिंगानुपात 777 था जो 2011 में बढ़कर 818 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर हो गया। इसके अलावा मिजोरम राज्य में 2001 व 2011 के मध्य लिंगानुपात में 40 स्त्रियों की वृद्धि दर्ज की गई। केन्द्र शासित प्रदेश दमन व दीव में लिंगानुपात में सर्वाधिक कमी 2001 व 2011 के मध्य दर्ज की गई है। यहां 2001 में लिंगानुपात 710 था जो वर्तमान 2011 में घटकर 618 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर रह गई है। इसके अलावा दादरव नागर हवेली में भी कमी दर्ज की गई है। जहाँ 2001 में लिंगानुपात 812 था जो 2011 में घटकर 775 स्त्रियां प्रति हजार पुरूषों पर रह गई।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार हरियाणा राज्य की जनसंख्या 2.1 करोड़ थी। यह भारत की कुल जनसंख्या का 2 प्रतिशत से भी अधिक था। जबकि हरियाणा राज्य का क्षेत्रफल भारत के कुल क्षेत्रफल का 1.3 प्रतिशत है। 2001 की जनगणना के अनुसार हरियाणा का भारत में जनसंख्या के आधार पर 16वां स्थान है। जबकि 1991 की जनगणना में इसका 15वां स्थान था।

हरियाणा भारत के अधिक जनसंख्या वाले राज्यों के अन्तर्गत आता है। 2001 के जनगणना आंकड़ो के अनुसार फरीदाबाद 22.39 लाख जनसंख्या के साथ प्रथम स्थान पर है जो हरियाणा की कुल जनसंख्या का 10.4 प्रतिशत भाग है। फरीदाबाद में अधिक जनसंख्या का कारण वहाँ का औद्योगिक विकास है। इसके विपरित पंचकूला सबसे कम 4.69 लाख वाला जिला है। यहाँ पर हरियाणा की कुल जनसंख्या का 2.22 प्रतिशत भाग है। 2001 की जनगणना के अनुसार गुड़गाँव दूसरे स्थान पर है। हरियाणा के 9 जिले जिनकी जनसंख्या 10 लाख से ऊपर है। वे जिले फरीदाबाद, गुड़गाँव, हिसार, भिवानी, सोनीपत, करनाल, जीन्द, सिरसा औ अम्बाला आदि है।

जनसंख्या घनत्व

1991 में हरियाणा का जनसंख्या घनत्व 372 तथा 2001 में बढ़कर 477 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. हो गया। हरियाणा के मुकाबले भारत का जनसंख्या घनत्व 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। फरीदाबाद जिले में सबसे ज्यादा 1020 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. जनघनत्व है।

हरियाणा में ऐसे 12 जिले हैं जिनका जनघनत्व अधिक है और 7 जिलों का जनसंख्या घनत्व औसत से कम है।

जनसंख्या वृद्धि

हरियाणा राज्य में जनसंख्या तेज से बढ़ती जा रही है। हरियाणा में दशकीय वृद्धि 1981–91 में 27.41 प्रतिशत थी जो 1991–2001 में बढ़कर 28.6 प्रतिशत हो गई। हरियाणा में रोहतक, कैथल तथा महेन्द्रनगर में वृद्धि दर कम है। जब से हरियाणा राज्य का निर्माण हुआ है तब से पंचकूला, फरीदाबाद गुड़गाँव तथा पानीपत में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. बोस, आशीष (1978) : अर्बनाईजेशन, टाटा मैंक्ग्रा हिल. नई दिल्ली।
2. अग्रवाल, एस.एन.(2006) : इण्डियाज पोपुलेशन प्रोब्लम्स, द्वितीय संस्करण, टाटा मैक्ग्रा हिल, नई दिल्ली।
3. बेउजाऊ, गार्नियर(1966) : जनसंख्या की संरचना, लंदन
4. चांदना, आर.सी.(1987) : जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
5. शर्मा, डॉ0 एच.एस.(2001) : जनसंख्या भूगोल, गोरखपुर।